प्रातः सभा 3/1/69 ओम शान्ति पिता श्री शिवबाबा याद है?
ओम शान्ति। अभी यह तो बच्चे जानते हैं कि हम बाबा के सामने बैठे हैं। बाबा भी जानते हैं बच्चे हमारे सामने बैठे हैं। यह भी तुम जानते हो बाप हमको शिक्षा देते हैं, जो फिर औरों को देनी है। पहले2 तो बाप का ही परिचय देना है; क्योंकि सभी बाप को और बाप की शिक्षा को भूले हुये हैं। अभी जो बाप पढ़ाते हैं यह पढ़ाई फिर 5000 वर्ष बाद मिलेगी। यह ज्ञान और किसको है नहीं। मुख्य हुआ बाप का परिचय। फिर यह भी समझाना है हम सभी भाई–भाई हैं। सारी दुनियां के जो भी आत्माएँ हैं सभी आपस में भाई–भाई हैं। सभी अपना मिला हुआ पार्ट इस शरीर द्वारा बजाते हैं। अभी तो बाप आये हैं नई दुनियां में ले जाने लिये जिसको स्वर्ग कहा जाता है; परन्तु हम सभी भाई पतित हैं। एक भी पावन नहीं। सभी पतितों को पावन बनाने वाला एक ही बाप है। यह है ही पतित, विकारी, भ्रष्टाचारी रावण की दुनियां। रावण का अर्थ ही है 5 विकार स्त्री में, 5 विकार पुरूष में। बाबा बहुत सहज रीति समझाते हैं। तुम भी ऐसे समझा सकते हो। तो पहले–पहले यह समझाओ हम आत्माओं का वह बाप है, हम सभी ब्रदर्स हैं यह ठीक है? लिखो। हम सभी भाई–भाई हैं हमारा बाप भी एक है। हम सभी आत्माओं का वह है परम आत्मा। उनको फादर कहा जाता है। यह पक्का2 बुद्धि में बिठाओ तो सर्वव्यापी आदि की किचड़पट्टी पहले निकल जाये। अलफ पहले पढ़ना है। बोलो, यह अच्छी रीति बैठ लिखो। आगे सर्वव्यापी कहता था अभी समझता हूं सर्वव्यापी नहीं है। हम सभी भाई2 हैं। कुत्ता–बिल्ली, शेर–बकरी तो ऐसे नहीं कहेंगे हम भाई–भाई हैं। मनुष्य की आत्मा कहती है गॉडफादर। परमपिता अल्ला। पहले तो यह निश्चय बिठाना है हम आत्मा हैं। हम परमात्मा नहीं हैं, न हमारे में परमात्मा व्यापक है। सभी में आत्मा व्यापक है। आत्मा शरीर के आधार से पार्ट बजाती है, यह पक्का निश्चय कराओ। अच्छा वह ब(बा) सृष्टि के आदि–मध्य–अन्त का ज्ञान भी सुनाते हैं और तो कोई यह जानते ही नहीं कि इस सृष्टि चक्र की ..... इतनी है। बाप ही टीचर के रूप में बैठ समझाते हैं। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। यह चक्र अनादि बना बनाया है, बराबर है। बना बनाया कैसे है इसको जानना पड़े। सतयुग, त्रेता पास्ट हुई। नोट करो। उनको कहा जाता है स्वर्ग और सेमी स्वर्ग। जहां देवी देवताओं का राज्य चलता है। वह 16 कला, वह है 14 कला। आस्ते2 कलाएं कम होती जाती हैं। जगह पुरानी तो जरूर होगी। सतयुग का प्रभाव बहुत भारी है। नाम ही है स्वर्ग, हेविन। नई दुनियां सतयुग को कहा जाता है। इसकी ही महिमा करनी है। नई दुनियां में है एक ही आदि सनातन देवी–देवता धर्म। पहले बाप का परिचय फिर चक्र का परिचय दिया जाता है। चित्र भी तुम्हारे पास निश्चय .... जरूर कराना है। यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। सतयुग त्रेता पास्ट हो गया। सतयुग में ल0ना0 ... राज्य था। त्रेता में राम सीता का राज्य था। यह हुआ आधा कल्प। इस कल्प की आयु ही 5000 वर्ष है। अब (सूर्य)वंशी, चन्द्रवंशी तो बुद्धि में बैठा। विष्णु पुरी ही बदल कर फिर राम–सीता पुरी बनती है। उनकी भी डिनायस्टी चलती है ना। दो युग पास्ट हो गया। अब आता है द्वापर में रावण–राज्य। देवताएं वाममार्ग में चले जाते विकार की सिस्टम बन जाती है। सतयुग त्रेता में तो सभी निर्विकारी रहते हैं। एक आदि सनातन देवी–देवता धर्म रहता है। चित्र भी दिखाना है। ओरली भी समझाना है। बाप हमको टीचर होकर ऐसे पढ़ाते हैं। बाबा परिचय खुद ही आकर देते हैं। खुद कहते हैं मैं आता हूं पतितों को पावन बनाने। तो मुझे शरीर तो जरूर चाहिए ना, नहीं तो बात कैसे करूं? मैं चैतन्य हूं, सत हूं और अमर हूं। सतो रजो तमो में आत्मा आती है। आत्मा ही पतित और पावन बनती है। इसलिये कहा जाता है पतित–आत्मा और पावन–आत्मा। आत्मा में सभी संस्कार हैं। पास्ट के कर्म वा विकर्म का संस्कार आत्मा ले आती है। सतयुग में तो विकर्म होता ही (नहीं)। कर्म करते हैं, पार्ट बजाते हैं; परन्तु वह कर्म अकर्म हो जाते हैं। गीता में भी अक्षर है हे अर्जुन मैं तुमको अकर्म, विकर्म की गति समझाता हूं। अभी तुम प्रैक्टिकल में समझ रहे हो। जानते हो बाबा आया हुआ है। दुनियां को बदलते हैं। जहां कर्म अकर्म होते हैं उनको सतयुग कहा जाता, जहां कर्म विकर्म होते हैं उ(नको)

कलियुग कहा जाता है। तुम अभी हो संगम पर। बाबा दोनों तरफ़ की बातें समझाते हैं। सतयुग त्रेता तो है पवित्र दुनियां। वहां कोई पाप होता ही नहीं। जब रावण राज्य होता है तब ही पाप होते हैं। वहां विकार का नाम निशान नहीं होता। चित्र तो समाने हैं। रामराज्य और रावण राज्य भी कहते हैं। तो बाप समझाते हैं यह पढ़ाई है। बाप के सिवाय और कोई नहीं जानते। शास्त्रों में तो गपोड़ा लगा दिया है। यह भी अच्छी रीत (नो)ट कर और याद करो। बरोबर हरेक युग 1250 वर्ष का है। चार युग गाये जाते हैं– सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग। उनको स्वस्तिका भी कहते हैं। चौपड़ी आदि बनाते हैं तो यही निशानी देते हैं। अर्थ ही नहीं समझते। यह डिवाइड(बांटा हुआ) किया हुआ है। यह पढ़ाई तो तुम्हारी बुद्धि में रहनी है। बाप भी याद आता है तो सृष्टि चक्र भी बुद्धि में आता है। सेकण्ड में सभी आ जाते हैं। वर्णन करने में देरी नहीं लगती है। इनकी तीन ....उन्टेन हैं। इतने बड़े झाड़ में ऐसा होता है। बीज और झाड़ सेकण्ड में याद आ जावेगा। यह बीज फलाने झाड़ का है। ऐसे इनसे फल निकलता है। यह बेहद का मनुष्य सृष्टि रूपी झाड़ कैसे है। इनका राज तुम समझते हो। सतयुग त्रेता में होते ही हैं पवित्र देवी देवताएं। अपवित्र तब बनते हैं जबकि रावण राज्य शुरू होता है। ..... को सारा समझाया आधा कल्प किसकी डिनायस्टी चलती है। फिर रावण राज्य होता है तो जो सतयुग त्रेता ..... वासी हैं फिर द्वापर वासी बन जाते हैं। यह भी समझते हो झाड़ वृद्धि को पाता रहता है। आधा कल्प के (बा)द रावण राज्य होता है, विकारी बन जाते हैं। तुमको 84 जन्मों का समझाना है। रावणराज्य में आयु भी घट (जात)ी है। बाप से जो वरसा मिला वह आधा कल्प चला। नालेज सुनाकर वरसा दिया व प्रारब्ध भोगी अर्थात् सतयुग–त्रेता में सुख पाया। उनको सुखधाम सतयुग कहा जाता है। वहां दुःख होता ही नहीं। कितना सहज ..... है। एक को समझाते हो या बहुतों को समझाते हो तो ऐसा ध्यान देना है, समझता है, हां हां करते हैं बोलो, नोट करते जाओ। कोई शंका हो तो पूछना। जो बात कोई नहीं जानता हो वह हम समझाते हैं। तुम कुछ जानते नहीं हो तो पूछेंगे फिर क्या। बेसमझ कुछ भी पूछ नहीं सकते। जो समझाते हैं वह जरूर समझू हैं। (बेस)मझ को ही समझाना होता है। बाबा से हम क्या पूछ सकते। बाबा तो सारी इस बेहद झाड़ की नालेज .....ाते हैं। यह नालेज अभी तुम समझते हो। बाप ने समझाया है तुम 84 के चक्र में कैसे आते हो। यह अच्छी ..... नोट कर फिर विचार सागर मंथन करना है। जैसे टीचर निबन्ध देते हैं फिर घर में जाकर रिवाइज .... आते हैं। तुम भी यह नालेज देते हो फिर देखो क्या लिखता है। पूछते रहो। एक एक बात अच्छी रीत समझी? टीचर का समझाया। बाकी है गुरू का कर्तव्य। उनको बुलाया ही है कि आकर पतितों को पावन बनाओ। आत्मा पावन बनती है तो फिर शरीर भी पावन मिलता है। जैसा सोना वैसा जेवर बनता है। 24 कैरट सोना ..... खाद नहीं डालेंगे तो जेवर भी ऐसा सतोप्रधान बनेंगे। खाद डालने से तमोप्रधान बन जाती हैं। क्योंकि ..... पड़ती है ना। यह जो सृष्टि है पहले2 भारत 24 कैरट, पक्के सोने की चिड़ियां थी अर्थात् सतोप्रधान दुनियां थी। फिर अभी तमोप्रधान हैं। पहले प्योर सोना है। नई दुनियां प्योर, पुरानी दुनियां है इम्प्योर। खाद .... जाती है। यह बाप ही समझाते हैं और कोई मनुष्य गुरू लोग नहीं जानते। बुलाते हैं आकर पावन बनाओ। वो गुरू का काम है। वानप्रस्थ अवस्था में मनुष्य गुरू करते हैं। वाणी से परे अवस्था तो है ही इनकारपोरीयल वर्ल्ड में। महान आत्माएं रहती हैं। यह है कारपोरीयल वर्ल्ड। दोनों का यह मेल यहां। वहां तो शरीर नहीं। वहां कोई कर्तव्य वा कर्म होता ही नहीं। बाप में सारी नालेज है ड्रामा पलैनअनुसार। उनको कहा ही जाता है नालेजफुल। चैतन्य वह सत्, चित्, आनन्द स्वरूप है इसकारण उनको नालेजफुल कहा जाता है। बीच में .... सृष्टि रूपी झाड़ की नालेज होगी ना। वही नालेज समझाते हैं। बुलाते भी हैं हमको आकर पतित से पावन (बनाओ)। हे पतित–पावन, नालेजफुल बाबा, शिवबाबा। उनका नाम सदैव शिव ही है। बाकी आत्माएं सभी आती ... पार्ट बजाने। तो भिन्न2 नाम रूप रखाते हैं। बाप को बुलाते हैं; परन्तु उनको कुछ भी समझ हीं रहती। जरूर ..... रथ भी होगा, जिसमें बाप प्रवेश करे तुमको पावन दुनियां में ले जाने। तो बाप समझाते हैं मीठे2

बच्चों मैं उनके तन में आता हूं जो बहुत जन्मों के अन्त में है। पूरा 84 जन्म लेते हैं। राजाओं का राजा बनाने लिये भाग्यशाली रथ पर आना पड़ता है। पहले नम्बर में तो श्री कृष्ण। वह है नई दुनियां का मालिक। फिर वही नीचे उतरते हैं। सूर्यवंशी सो चन्द्रवंशी, चन्द्रवंशी सो वैश्यवंशी, वैश्यवंशी शूद्रवंशी सो फिर ब्राह्मणवंशी बनते हैं। गोल्डेन से सिलवर, कापर, आयरन एज में आते हैं। अभी फिर तुम आयरन से गोल्डेन बन रहे हो। बाप कहते हैं सिर्फ मुझ अपने बाप को याद करो। जिसमें प्रवेश किया है उनकी आत्मा में तो जरा भी यह नालेज नहीं थी। इनमें मैं प्रवेश करता हूं इसलिये इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। नहीं तो सभी से ऊंच यह ल0ना0 है ना। इनमें प्रवेश करना चाहिए; परन्तु इनमें परमात्मा प्रवेश नहीं करते हैं। इसलिये इनको भाग्यशाली रथ कहा जाता है। रथ में आकर पतितों को पावन बनाना है तो जरूर कलियुग तमोप्रधान होगा ना। खुद कहते हैं मैं बहुत जन्मों के अन्त में आता हूं। गीता में अक्षर एक्युरेट है। गीता को ही सर्वशास्त्रमई शिरोमणि कहा जाता है। इस संगमयुग पर ही आकर बाप ब्राह्मण कुल और देवता कुल की स्थापना करते हैं और तो सभी का मालूम है ही। इनका कोई को पता नहीं है। बहुत जन्मों के अन्त में अर्थात् संगम युग पर ही बाप आते हैं। बाप कहते मैं बीज रूप हूं। कृष्ण तो है ही सतयुग का रहवासी। उनको दूसरे जगह तो देख न सके। पुनर्जन्म तो नाम–रूप, देश–काल सभी बदल जाता है। फिचर्स ही बदल जाते हैं। पहले छोटा बच्चा फिर सयाना होता है। फिर बड़ा होता है। फिर वह शरीर छोड़ दूसरा छोटा लेना है। यह बना बनाया खेल ड्रामा के अन्दर फिक्स है। दूसरा शरीर लिया तो उनको कृष्ण नहीं कहेंगे। उस दूसरे शरीर पर तो नाम आदि दूसरा पड़ेगा ना। समय, फिचर्स, तिथी, तारीख सभी बदल जाता है। वर्ल्ड की हिस्ट्री जागराफी हूबहू रिपीट होता है। तो यह ड्रामा रीपिट होता रहता है। सतो रजो तमो में आना ही है। सृष्टि का नाम, युग का नाम सभी बदल जाते हैं। अभी यह है संगमयुग। मैं आता ही हूं संगम पर। मैं तुमको सारी दुनियां की हिस्ट्री जागराफी सत्य बताता हूं। आदि से लेकर अन्त तक और कोई जानता ही नहीं। सतयुग की आयु कितनी थी यह पता न होने कारण वह लाखों वर्ष कह देते हैं। अभी तुम्हारी बुद्धि में है। भल कोई नया होगा; परन्तु लिखत ठीक होगी तो ध्यान में रहेगा यह हमको अन्दर में पक्का करना है। बाप बाप, टीचर, गुरू है। जो फिर से सतोप्रधान बनने लिये युक्ति बड़ी बत(लाते) हैं। गीता में भी है देह सहित देह के सभी धर्म छोड़ अपन को आत्मा समझो। वापस अपने घर जरूर जाना (है)। भक्ति मार्ग में कितनी मेहनत करते हैं भगवान पास जाने लिये। वह है मुक्तिधाम। कर्म से मुक्त। हम निराकार(ी) दुनियां में जाकर बैठते हैं। पार्टधारी घर गया तो पार्ट से मुक्त हुआ ना। सभी चाहते हैं हम मुक्ति पावें। किसको मिल न सके। यह ड्रामा अनादि अविनाशी है। कोई कहते हैं यह पार्ट आने जाने का हमको प.... नहीं; परन्तु इसमें कुछ कर नहीं सकते। यह अनादि ड्रामा बना हुआ है। एक भी मोक्ष नहीं पा सकते। वह हैं अनेक प्रकार के मनुष्य मत। यह है श्रीमत श्रेष्ठ बनाने लिये। मनुष्य को श्रेष्ठ नहीं कहेंगे। देवताओं को कहा जाता है। उन्हों के आगे सभी नमन करते हैं तो श्रेष्ठ ठहरे ना; परन्तु यह भी किसको पता नहीं है। तो तुम समझते हो 84 जन्म तो लेना ही है। कृष्ण तो देवता है, वैकुण्ठ का प्रिन्स, वह यहां कैसे आवेंगे न उसने गीता सुनाई सिर्फ देवता था इसलिये असुर लोग उनको पूजते हैं। देवताओं को देवताएं नहीं पूजते। जिनमें खामियां हैं, खराबियां हैं वह पूजते हैं; क्योंकि देवताएं हैं पावन। खुद पतित ठहरे। कहते भी हैं मैं निर्गुण हारे में कोई गुण नाहीं..... आपे ही तरस परोई। आप हमको ऐसा बनाओ। आत्मा ही सभी कुछ करती है। शिव के आगे जाकर कहेंगे हमको मुक्ति दो वह तो कब जीवनमुक्ति जीवनबन्ध में आते ही नहीं। उनको पुकारते हैं मुक्ति दो। जीवनमुक्ति भी वह देते हैं या तो कहेंगे दोनों दो; परन्तु अकल बिल्कुल .... है। मांगते भी हैं फिर कह देते हैं ठिक्कर–भित्तर में है। कच्छ अवतार, मच्छ अवतार। स्नान करते हैं तो यह ... हैं। बराह अवतार, परशुराम अवतार यह किया, यह किया। अभी बाप तो ऐसे कुछ नहीं करते हैं। कुछ भी नहीं ... कोई भी मनुष्य शिव की न ब्रह्मा, विष्णु, शंकर की, न ल0ना0 की एक्टिविटी को जानते हैं। कृष्ण के

कितनी निन्दा लिख दी है। सिर्फ़ ल0ना0 के लिये कोई उल्टा कलंक नहीं लगाया है। समझाते हैं ल0 से तो धन लेना है। अम्बा के आगे जाकर उनसे तो बहुत चीज़ें मांगते हैं। पुत्र चाहिए, यह चाहिए। लक्ष्मी से सिर्फ़ धन मिलता है। समझते हैं उनके पास अथाह धन है। अभी तुम समझते हो बाबा और मम्मा जिसके हम बच्चे हैं हमको तो अथाह धन देते हैं। वहां तो बीमारी आदि कुछ भी नहीं होता। मनुष्य तो बेसमझ से मांगनी करते रहते हैं। बेसमझ तो जरूर दुःखी ही होंगे। अथाह दुःख भोगनी पड़ती है। तो यह सभी बातें बच्चों की बुद्धि में होनी चाहिए। पहले पहले मलयुद्ध सीखते हैं तो पहले वाणों से लड़ते हैं फिर बन्दूक से। तलवार से लड़ते हैं। अभी तो देखो बॉम्स से क्या कर देते हैं। गीता में भी दिखाया है और फिर अविनाशी पद भी दिखाया है। सतयुग में तुम अविनाशी पद पाते हो। बाकी यहां तो देखो कितना दुःख है। बेहद के बाप को न जानने कारण आरफन के बन जाते हैं। वह होते हैं हद के आरफन यह हैं बेहद के आरफन। बाप समझाते हैं सभी बेहद के आरफन हैं। वृद्धि को पाकर बहुत आकर इकट्ठे हुये हैं। एक तरफ़ कितने थोड़े हैं। दूसरे कितने ढेर मनुष्य हैं। बाप नई दुनियां स्थापन करते हैं। अभी हैं ही पतित आत्माएं। पतित दुनियां। तत्व आदि सभी पतित हैं। पावन दुनियां सतयुग को कहा जाता है। पतित दुनियां कलियुग को कहा जाता है। नया सो पुराना जरूर होता है। बुद्धि में (य)ह सभी बातें हैं ना। पुरानी दुनियां का विनाश हो जावेगा फिर हम नई दुनियां में ट्रान्सफर हो जावेंगे। अभी टेम्परेरी संगम युग पर खड़े हैं। पुरानी दुनियां से नई बन रही है। सतयुग त्रेता, फिर नीचे उतरते हैं। नई दुनियां का भी पता है तुम्हारी बुद्धि अभी नई युग (स्वर्ग) में जानी चाहिए। उठते बैठते यही बुद्धि में रहे ..... पढ़ाई पढ़ रहे हैं। बाप हमको पढ़ाते हैं। स्टुडेन्ट को यह तो याद रहना चाहिए ना। फिर भी वह याद नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार रहती है। बाप भी नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार याद प्यार देते हैं। अच्छा पढ़ने वाले को टीचर जरूर जास्ती प्यार करेंगे। कितना फर्क पड़ जाता है। अभी बाप तो समझाते रहते हैं। बच्चों को (धार)णा करनी है। एक बाप के सिवाय और कोई तरफ़ बुद्धि न जावे। बाप को याद न करेंगे तो पाप कैसे कटेंगे। माया घड़ी2 तुम्हारी बुद्धियोग तोड़ देती है। माया बहुत धोखा देती है। बाबा मिसाल देते हैं भक्ति मार्ग में ना0 की पूजा करता था। ल0 को तो मुक्त कर दिया फिर भी बुद्धि इधर–उधर जाती थी। तो अपन को (थप्पड़) मारते थे। बुद्धि और तरफ क्यों जाती है। आखरीन विनाश भी देखा स्थापना भी देखा। सा0 की आस पूरी ....। समझा अभी नई दुनियां आती है। हम यह बनेंगे। अभी यह पुरानी दुनियां तो विनाश हो जावेगा। पक्का .....य हो गया। अपनी राजधानी का भी सा0 हुआ तो बाकी इस रावण राज्य को क्या करेंगे। जबकि स्वर्ग की राजाई मिलती है। क्या करेंगे। यह हुई ईश्वरीय बुद्धि। ईश्वर ने प्रवेश कर यह बुद्धि चलाई कि क्या करेंगे। ज्ञान कलश तो माताओं को मिलता है। माताओं को ही सभी कुछ दे दिया। तुम कारोबार सम्भालो। सभी को .....। सिखलाते2 यहां तक आ गये। एक/दो को सुनाते2 अभी कितने हो गये हैं। आत्मा प्योर होती जाती फिर आत्मा को पवित्र शरीर मिलता है। यह भी समझते हो इस बॉम्स से पुरानी दुनियां का विनाश आगे .... आ था। समझते भी हैं; परन्तु फिर भी माया भुला देती है। वास्तव में सात दिन का कोर्स एक जगह लेना चाहिए। तुम कहते हो सात रोज पढ़ो तो कहते कल आवेंगे। दूसरे दिन माया खलास कर देती। आते नहीं। भगवान पढ़ाते हैं, तो भगवान से नहीं आकर पढ़ते हैं। कहते भी हैं हां जरूर आवेंगे; परन्तु माया उड़ाये .... है। रेगुलर होने न देती है। जिन्होंने कल्प पहले पुरूषार्थ किया है वह जरूर करेंगे और कोई हटी है नहीं। तुम पुरू0 करते हो, बड़े2 म्युजियम आदि बनाते हो आवे तो समझावें। जिन्होंने कल्प पहले समझा है वह समझेंगे। विनाश होगा। स्थापना भी हो जाती है। आत्मा पढ़कर फिर फर्स्ट क्लास शरीर लेगी। एमआबजेक्ट है ना। यह याद नहीं पड़ना चाहिए। अभी नई दुनियां में जाते हैं अपने2 पुरूषार्थ अनुसार। जितना टीचर का आज्ञाकारी, सुप्रीम का आज्ञाकारी बनेंगे तो कहेंगे यह सपूत बच्चे हैं। जो आज्ञा नहीं मानते तो कपूत ही कहेंगे। अच्छा, मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग और नमस्ते।